चुने हुए शेर

दिनेश सिंदल

सम्पादन

हरेराम समीप

दिनेश सिंदल

जन्म : 11 मई 1956, सिरोही (राज.)

प्रकाशित कृतियाँ : 'यहाँ से शुरू कीजिये' (काव्य), 1988, 'क माने कबूतर नहीं', (कविता), 1993, 'आँखों में ऑलपिन', (ग़ज़लें), 1996, 'चुप्पियाँ', (ग़ज़लें), 2007, 'कुछ न कुछ वैसा', (ग़ज़लें), 2009, 'तुम मैं और आधा चाँद', (प्रेम कविताएँ), 2008, 'चंद्रमुखी तुम कहाँ हो', (कविता), 2014, 'विलोम का उल्टा', (ग़ज़लें), 2016, 'रोशनी की ग़ज़ल', (ग़ज़लें), 2017, 'चाँद छूने तक', (ग़ज़लें), 2019, 'पत्र नदी के नाम', (दोहे), 2022।

इनके अतिरिक्त साक्षरता एवं साम्प्रदायिक सदभाव पर कुछ पुस्तिकाएँ।

विभिन्न कैसेटों एवं सहयोगी संग्रहों में रचनाएँ सम्मिलित

सम्पादन : राजस्थान के हिंदी ग़ज़लकारों के संग्रह 'खुश्बू के रंग' का सम्पादन-संयोजन

राष्ट्रीय स्तर के कवि-मंचों पर काव्य-पाठ एवं सम्मान।

संपर्क : दिनेश सिंदल, 20E/53, चोपसनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 (राज.)

मो. : 9414533344, 7742944505 (व्हाट्सऐप)

ईमेल : dineshsindal4@gmail.com

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-81-970121-1-2

₹ 160.00

चुने हुए शेर

दिनेश सिंदल

चुने हुए शेर

दिनेश सिंदल

सम्पादन

हरेराम समीप

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-81-970121-1-2

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो.: 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024

© दिनेश सिंदल

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम

मुद्रक : श्री बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पण

सभी हिन्दी ग़ज़ल
प्रेमियों के नाम...

किसी इक फूल की बू तो किसी का रंग भाया है
तुझे इकमुश्त खो बैठा मगर क़िस्तों में पाया है

मानवीय संवेदना का ग़ज़लों में अनुवाद

–हरेराम समीप

दिनेश सिंदल एक लोकप्रिय ग़ज़लकार हैं। पिछले चार दशकों से वे निरंतर गीत, कहानी और ग़ज़ल-लेखन में तल्लीन हैं। यद्धपि दिनेश ने कहानियाँ तथा समीक्षाएं भी लिखी हैं, लेकिन उनकी मूल विधा ग़ज़ल ही है। हिन्दी ग़ज़ल के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए वे एक लेख में लिखते हैं, "अब हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप साफ हो गया है। इसमें समकालीन कविता के जटिल विषयों को अपनी सांकेतिकता, प्रभावोत्पादकता, भाषा की सहजता से सहज बना दिया है। हिन्दी और उर्दू की दो काव्य-संस्कृतियों के मिलने पर जिस एक नई भाषा का निर्माण हुआ, नई संवेदना का निर्माण हुआ, या यूँ कि मानवीय संवेदना का विस्तार हुआ वही भाषा, वही संवेदना हिन्दी ग़ज़ल की भाषा बनी। ग़ज़ल की संवेदना को समझने के लिए ग़ज़ल के शब्दकोशीय अर्थ-गजाला, हिरन का बच्चा और हिरन के बच्चे को लगे तीर को निकालते समय निकलने वाली कराह किसी समय ठीक रहे होंगे, लेकिन 'हिंदी ग़ज़ल' की संवेदना को समझने के लिए ये पर्याप्त नहीं हैं। क्योंकि हिन्दी ग़ज़ल एक आन्दोलन भी है तो एक संस्कार भी है।"

अपनी रचनायात्रा में कविता, कहानी संग्रहों आदि की पन्द्रह पुस्तकों में जो छह ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनके नाम क्रमशः–'आँखों में आलपिन', 'चुप्पियाँ', 'कुछ न कुछ वैसा', 'विलोम का उल्टा', 'रौशनी की ग़ज़ल और चाँद छूने तक' हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने साक्षरता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर अनेक शिक्षाप्रद पुस्तिकाएं लिखी हैं। समय-समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में उनके हिन्दी ग़ज़ल से सम्बन्धित अनेक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। लेखन के साथ ही उन्होंने राजस्थान के प्रतिनिधि ग़ज़लकारों के संग्रह 'खुशबू के रंग' का भी संपादन किया। उन्होंने टी वी धारावाहिकों हेतु गीत-रचना भी की है। उन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी का 'चंद्रदेव शर्मा पुरस्कार' तथा अन्य अनेक